ब्रितानी भूमि नीति के परिणाम

ब्रिटेन से आयातित भू राजस्व नीति का परिणाम भारतीय जनमानस के लिए नुकसानदायक रहा तथा कंपनी के राजस्व में वृद्धि हुई। राजस्व में वृद्धि ने कंपनी के शासन को पूर्णतः स्थापित करने में सहयोग दिया। इस प्रकार यदि देखा जाए तो अंग्रेजों की भू राजस्व नीति का परिणाम दूरगामी हुआ। जो कि निम्न है।

① जमीन का हस्तांतरणीय बनना :→ अंग्रेजी सरकार के भू राजस्व नीति में बदलाव के परिणामस्वरूप जमीन ("Land) एक ऐसी वस्तु बन गई जिसे आसानी से खरीदा या बेचा जा सकता था। जमीन को लगान चुकाने के लिए बेचा या गिरवी रखा जा सकता था यदि ऐसी व्यवस्था नहीं होती तो सरकार के लिए लगान वसूलना कठिन हो जाता। यही कारण था कि सरकार ने ऐसी व्यवस्था का निर्माण किया। इस व्यवस्था से एक तरफ अंग्रेजी राज को लाभ हुआ तो वहीं दूसरी तरफ भारत के सामाजिक आर्थिक ताने बाने पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। जमीनों के बटने से संयुक्त परिवार टूटने लगे और परिवार में जमीन को लेकर झगड़े एवं मुकदमेबाजी शुरू हुई।

② भूमि को पूँजी विनिमय का साधन बनाना :→ इस भूमि व्यवस्था के कारण भूमि की तरफ आकर्षण लोगों का बढ़ने लगा क्योंकि तब तक कुटीर उद्योगों की बर्बादी हो चुकी थी। महाजनी या जो सरकार 'local Bankers' थे उनका भी धंधा लगभग चौपट हो गया था। उन लोगों ने भी अपनी पूँजी जमीन में लगानी शुरू कर दी।

Scanned with CamScanner

कुटीर उद्योगों के पतन के बाद महाजनों, बैंकरों ने अपना पैसा जमीन से संबंधित उद्योग जैसे कृषि, नील, कपास, अफीम कृषि में लगाने लगे। वे छोटे छोटे किसानों को ऋण देने लगे ताकि वे लगान चुका सके। इस ऋण का बोझ इतना ज्यादा हो जाता था कि किसान को अपने जमीन से ही हाथ धोना पड़ता था। इस प्रकार महाजन वर्ग किसानों की जमीन हड़प कर भूमिपति वर्ग बन गया और छोटे छोटे किसान जमीन से बेदखल होने पर मजदूर बन गए।

3) किसानों पर कर्ज का बोझ बढ़ना :→ नई भूमि व्यवस्था में किसी भी परिस्थिति में किसान को (tax) कर चुकाना ही था। अकाल की स्थिति में भी औपनिवेशिक काल में अंग्रेजी राज ने लगान लिया है। यही कारण है कि सूखे और बाढ़ की स्थिति में फसलों के उत्पादन न होने के बावजूद भी किसानों को लगान देना पड़ता था जिसके लिए वे साहूकार से ऋण लेते थे। इस नई कर प्रणाली ने किसानों को दरिद्र बना दिया क्योंकि लगान एवं जमींदारी अंशों को चुकाने के बाद बड़ी मुश्किल से ही अपने खाने भर अनाज बच पाता था। उसके पास इतना अनाज नहीं बच पाता था कि उसे बेचकर वह अपनी आवश्यकताएँ पूर्ति कर सके। सूखे एवं बाढ़ के समय स्थिति भयावह हो जाती थी यही कारण है कि किसानों की अवस्था उत्तरोत्तर बिगड़ती गई।

4) उत्पादन में कमी :→ जमीन को हस्तांतरणीय और विभाज्य बनाकर उसे विखण्डित कर दिया गया। जमीन अब छोटे छोटे टुकड़ों में बटने लगा। छोटी जोत के कारण उत्पादन में कमी आई तथा नवीन साधनों

Scanned with CamScanner

का प्रयोग भी संभव नहीं हो सका। फसलों के कम उत्पादन का दुष्परिणाम भी किसानों को ही भुगतना पड़ा।

(5) जमींदार वर्ग का उदय :→ स्थायी भूमि बंदोबस्त ने जमींदारों के एक शक्तिशाली, साधन संपन्न वर्ग को जन्म दिया। इस वर्ग का मुख्य कार्य किसानों और सरकार के बीच बिचौलियों का काम करना था। सरकार और किसान दोनों ही इसके लिए सुविधाएं जुटाते थे। बदले में यह वर्ग सरकार का हिमायती एवं किसानों का शोषक बन गया। जमींदारों के अत्याचार किसानों पर उत्तरोत्तर बढ़ते गए। किसानों को उन अत्याचारों से मुक्ति दिलाने की व्यवस्था अंग्रेजी सरकार ने नहीं की।

(6) कृषि उत्पादनों का निर्यात :→ अंग्रेजी भू-नीति के चलते सरकार को खाद्यान्नों एवं कच्चे मालों के निर्यात की सुविधा प्राप्त हुई जिनकी इंगलैण्ड में आवश्यकता थी। वस्तुतः सरकार जमींदारों के माध्यम से किसानों से वैसी फसल पैदा करवाती थी जिसका निर्यात कर सरकार मुनाफा कमा सकती थी या अपने यहाँ के उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध करा सकती थी, जैसे रुई, पटसन, नील, अफीम, चाय इत्यादि। इनकी उपज पर अब ज्यादा ध्यान दिया जाने लगा। किसान भी इसलिए उपजाने को बाध्य होता था क्योंकि उससे उन्हें तत्काल धन उपलब्ध हो जाता था जो लगान चुकाने के लिए आवश्यक था। साथ ही कृषि एवं भूमि पर सरकारी नियंत्रण होने से सरकार को अनाज के निर्यात करने में भी सहूलियत हुई। इन सबका दुष्परिणाम भारतीय कृषक एवं आम जनता को भुगतना पड़ा।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार यदि देखा जाए तो अंग्रेजी भू राजस्व नीति के परिणामस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था में महान परिवर्तन हुए। समाज में जमींदार एवं साहूकार प्रधान बन गए। भूमिहीन श्रमिकों की संख्या बढ़ गई। कृषि का वाणिज्यीकरण हुआ एवं जमीन पर बोझ बढ़ गया। प्रो० विपिन चन्द्र के अनुसार, 'अंग्रेजों ने जमीन को एक माल का रूप देकर, जिसे खुले आम खरीदा या बेचा जा सकता था देश की तत्कालीन भूमि व्यवस्था में एक बुनियादी परिवर्तन किया। भारतीय गाँवों की निरंतरता हिल गई। वस्तुतः ग्रामीण समाज का पूरा ढांचा टूटने लगा।

Scanned with CamScanner